International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# पर्यावरण में बढ़ते प्रदूषण के कारण गौरैया चिड़िया की दिन ब दिन घटती संख्या पर एक अध्ययन

**डॉ. कुशल सिंह बघेल**

सहायक प्राध्यापक प्राणी-शास्त्र, Head of The Department Biotechnology and Microbiology, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय खरगोन (मoप्र)

**शोध सारांश-**

गौरैया हमारे पृथ्वी से क्यों लुप्त हो रही है, आज यह बड़ा सवाल हम सभी के सामने है। आपको बता दें कि, गौरैया घरेलू पक्षियों में शामिल है। गौरैया पक्षी इंसानों के बीच में रहती है, लेकिन अब इंसानों से दूर होते जा रही है। पहले घरों के आंगन में छतों पर या मुंडेर पर दिखाई देती थी। घर आंगन में फुदकने वाली ये गौरैया ना तो अब दिखाई देती है और ना ही इसकी आवाज सुनने को मिलती है। आज के इस युग में पक्षियों का जीवन व्यतीत करना दूभर हो गया है। क्योंकि पक्षियों को रहने के लिए ना तो अब पेड़ बचे हैं। और ना ही खाने के लिए खाना मिल पाता है। स्थिति तो तब और गंभीर हो जाती है। जब गर्मियों के दिनों में पक्षी भूख एवं प्यास की वजह से मारे जाते हैं। हम सभी का कर्तव्य है। कि हम इस बेजुबान पक्षी की रक्षा करें और हमें अपने घरों के आसपास के छायादार स्थान पर पानी रखना चाहिए जिससे यह पक्षी अपनी प्यास बुझा सके और अपना अनमोल जीवन बचा सके।

**शब्द कुंजी**- : शहरीकरण, आधुनिक वास्तुकला और खाने के स्त्रोत, प्रदूषण, उर्वरक , कीटनाशक सुपरबाजारों, आधुनिक इमारतों !

**प्रस्तावना**

गौरैया को अंग्रेजी में स्पैरो कहते हैं । इसे घरेलू चिड़िया डोमेस्टिक स्पैरो और हाउस स्पैरो भी कहा जाता है । हाउस स्पैरो का वैज्ञानिक नाम पेसर डोमेस्टिकस है ! गौरैया एक छोटी चिड़िया है। यह हल्की भूरे रंग या सफेद रंग में होती है। इसके शरीर पर छोटे-छोटे पंख और पीली चोंच व पैरों का रंग पीला होता है। नर गोरैया का पहचान उसके गले के पास काले धब्बे से होता है। 14 से 16 से.मी. लंबी यह चिड़िया मनुष्य के बनाए हुए घरों के आसपास रहना पसंद करती है। यह लगभग हर तरह की जलवायु पसंद करती है पर पहाड़ी स्थानों में यह कम दिखाई देती है। शहरों, कस्बों,गाँवों, और खेतों के आसपास यह बहुतयात से पाई जाती है। नर गौरैया के सिर का ऊपरी भाग, नीचे का भाग और गालों पर पर भूरे रंग का होता है। गला चोंच और आँखों पर काला रंग होता है और पैर भूरे होते है। मादा के सिर और गले पर भूरा रंग नहीं होता है। नर गौरैया को चिड़ा और मादा चिड़ी या चिड़िया भी कहते हैं। हर साल 20 मार्च को गौरैया दिवस के रूप में मनाया जाता हैं। अब कई क्षेत्रों में गंभीर जनसंख्या में गिरावट देखी जा

रही है घरेलू गौरैया गिरावट आई है, जिसके परिणामस्वरूप इस प्रजाति को संरक्षण चिंता की प्रजातियों की लाल सूची में रखा गया है! पर्यावरण के लिए जैव विविधता एक प्रमुख घटक है, पर्यावरण आर्थिक विकास, शहरीकरण और अन्य मानवीय गतिविधियों के कारण बनता है उन प्राकृतिक क्षेत्रों की रक्षा करना कठिन है जो संपूर्ण पर्यावरण को समायोजित करने के लिए पर्याप्त हैं ।

आज के इस आधुनिक युग में हम विकास की राह पर इतने तेजी से बढ़ रहे हैं। कि हम हमारे वातावरण को कई प्रकार से नुकसान पहुंचा रहे हैं। जिससे हमारे पर्यावरण मैं कई तरह की उथल-पुथल मच गई है। जो पक्षी हमारे पर्यावरण के लिए आवश्यक हैं। उनकी संख्या में निरंतर कमी आती जा रही है। यदि हम आज से कुछ समय पहले देखे तो हमारा वातावरण कितना स्वच्छता था। एवं हमारे चारों तरफ पक्षियों की चह चाहट सुनाई देती थी।

**गौरैया चिड़िया के घटने के कारण**

**शहरीकरण**- गौरैया एक ऐसी चिड़िया है, जो इंसान के घर आँगन में घोसला बनाकर उसके सबसे करीब रहती है. लेकिन शहरों के विस्तार और हमारी बदलती जीवन शैली से अब गौरैया के रहन सहन और भोजन में कई दिक्कतें आ रही हैं.यही वजह है कि शहरों में अब गौरैया की आबादी कम होती जा रही है. जैसे जैसे समय बीता तो लोगों ने कच्चे घर तोड दिए और पक्के मकान बन रहें हैं उनमें इनके रहने और अपना घोंसला बनाने की कोई जगह नहीं है जिससे शहर से चिडया गायब होती जा रही हे!

**वातावरण के बदलाव से भी दूर भाग रहीं**- पृथवी के लंबे इतिहास में जलवायु पैटर्न में बदलाव आया है, मानव -जनित जलवायु परिवर्तन की गति अभूतपूर्व है, जिससे पक्षियों के लिए अनुकूलन करना अधिक कठिन हो गया है! पक्षियों पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह से प्रभाव पड़ता है! जलवायु परिवर्तन और पक्षियों के बीच संबंध तेजी से स्पष्ट होते जा रहे हैं: जहां पक्षी रहते हैं वहां गर्म तापमान बदल रहा है, उनके प्रवास पैटर्न और अंडे देने का समय और यहां तक कि उनके शरीर के आकार भी बदल रहे हैं। गौरैया पर मोसन का प्रभाव प्रजनन ,प्रवास, भोजन ,और आवास पर सीधे प्रभाव पड़ता हे!

**भोजन और जल की कमी** - नगदी फसल की कृषि और जलवायु में परिवर्तन के कारण भोजन और जल की कमी देखि जा सकती है जप सीधे पक्षी को प्रभवित करती हे! पक्षी बहुत उच्च चयापचय वाले छोटे जानवर हैं। इन जानवरों को अपने शारीरिक कार्यों को बनाए रखने और भुखमरी से बचने में मदद करने के लिए भरपूर भोजन और पानी की आवश्यकता होती है। यदि किसी पक्षी के पास प्रचुर मात्रा में भोजन

है, तो वह अपने शरीर के तापमान को बनाए रखने में सक्षम होगा और कुछ समय तक पानी न पीने की स्थिति में भी खुद को लंबे समय तक जीवित रख सकेगा! .

**रासायनिक उर्वरक के प्रयोग के कारण**- रसायनिक उर्वरकों के अंधाधुध इस्तेमाल से पर्यावरण को भारी नुकसान पहुंच रहा है। रासायनिक उर्वरकों के बेइंतहा इस्तेमाल से जहां खेतों की उर्वरा शक्ति क्षीण होती जा रही है! बल्कि इससे जमीन की सेहत, इससे पैदा होने वाली फसल को खाने वाले पक्षियों पर भी सीधे प्रभाव पड़ता हे !

**कीटनाशक के प्रयोग के कारण**- कीटनाशक शब्द उन रसायनों के लिए एक प्रचलित शब्द है जो उन सभी चीज़ों को मार देते हैं या नियंत्रित करते हैं जिन्हें मनुष्य कीट मानता है। कीटनाशक उपलब्ध भोजन की मात्रा को कम करके या निवास स्थान में परिवर्तन करके पक्षियों को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित कर सकते हैं बल्कि खाद्य श्रृंखला और पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है। जो पक्षी कीड़े खाते हैं, वे वास्तव में नुकसान में होते हैं जब कीटनाशकों के प्रयोग के कारण उपलब्ध कीट शिकार की संख्या में गिरावट आती है!

**आवास, और प्रजनन की कमी** – शहरीकरण, कोलोनिया, बिल्डिंग, सिटी का निर्माण होने से गोरया को पर्याप्त भोजन, प्रजनन और पोषण की कमी घरों में वेंटिलेटर के स्थान पर एयर कंडीशनर, वाले मकान बनने के कारण चिड़िया अपना घोसला नहीं बना पा रही हे ! जिसके कारण वह अंडे देने के लिए उसे घोसले की आवश्यकता होती हे जिसके कारण चिड़िया पलायन कर रही है!

**मोबाइल टॉवर का प्रयोग**- इन टावरों से खतरनाक तरंगे वातावरण में फैलती हैं। लोगों को इसी कारण से दूरसंचार सेवाओं का लाभ मिल पाता है लेकिन जानकारों के अनुसार ये तरंगे पक्षियों के लिए काफी घातक होती है। जिसका सीधा असर इन पक्षियों पर पड़ता है और उनके लुप्त होने का कारण भी प्राय: यही है। पक्षी मौत के आगोश में समाते जा रहे हैं। यह सिलसिला तेज होता जा रहा है जिस कारण इन पक्षियों की चहचहाहट कम होती जा रही है। गौरतलब है कि मोबाईल टावरों के चुंबकीय तरंग इन पक्षियों को बुरी तरह से प्रभावित कर रही है। इसी कारण से पक्षी विलुप्त होते जा रहे है। यहां यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी की बढ़ते आधुनिक मोबाइल के दौर में व टावरों से निकलने वाली तरंगे इन पखियों को लुप्त करने का काम कर रही है।

## गौरैया चिड़िया को बचाने के लिए उपाय

**बिल्डर्स प्रोजेक्ट डिज़ाइन करें**-गौरैया को मिट्टी बहुत पसंद है और उसके साथ-साथ यदि उसमें बालू मिल जाए तो क्या कहने। इसमें बिल्डर्स की बड़ी अहम भूमिका हो सकती है। बिल्डर्स को चाहिए कि जब वे अपनी प्रोजेक्ट डिज़ाइन करें तब उनमें ग्रीन एरिया छोड़ें जहां पर बड़े आराम से गौरैया रह सकें। आपको जानकर हैरानी होगी कि मिट्टी में गौरैया को पसंदीदा कीड़े भी खाने को मिलते हैं।

**घरो के वेंटिलेटर खुले हो**- गौरैया हमारे घर के वेंटिलेटर के अंदर रहना चाहती है मगर रहे कैसे! हममें से कईयों ने आजकल वेंटिलेटर को दोनों तरफ से पैक करना शुरू कर दिया है। वेंटिलेटर से टकराकर संतुलन खोते हुए गिरते-गिरते उड़ने लगती हैं। हमने यह सोचकर वेंटिलेटर को पैक कर दिया कि ना रहेगा बांस ना बजेगी बांसुरी। मतलब वेंटिलेटर खुला ही नहीं रहेगा तो पक्षियों को बैठने का मौका कहां से मिलेगा

और इसी चक्कर में बेचारी गौरैया दर-दर भटकती है! जिसके कारण चिड़िया पलायन कर रही है!घरो के वेंटिलेटर खुले रखेंगे तो चिडया अपना घोसला बनाएगी और आगे पीढ़ी बढ़ाती जाएगी!

**छतो पर बर्तनो में जल भर कर और खाने के लिए अनाज रखे –** प्यास बुझाने के लिए या भोजन के लिए कहीं जाती है तो वहां उसे पानी और भोजन भी नसीब नहीं होता है।गोरया घरो में रहने वाली पक्षी है इसलिए छतो पर पानी और भोजन के लिए अनाज रखा जाना चाहिए !

**कीटनाशक का प्रयोग कम करें-** खेतो में आज अधिक उपज प्राप्त करने के लिए कीटनाशक का प्रयोग अंधाधुन किया जा रहा हे कीटो को चिडया भोजन के रूप में खाती है जिससे इनकी मृत्यु ज्यादा हो रही है तो कीटनाशक का कम प्रयोग कम करना चाहिए !

**जू में भी जागरुकता कार्यक्रम-** विश्व गौरैया दिवस पर गौरैया संरक्षण के जागरुकता के लिए चिड़िया घरों में लोगों को गौरैया अपने घर के आस-पास बनाए गए घोंसलों को तोड़ना नहीं चाहिए और हो सके तो कृत्रिम तरीके से घोसले बना देने चाहिए !

**निष्कर्ष-**

मनुष्य का लोभ एवं संवेदनहीनता भी त्रासदी की हद तक बढ़ी है, जो वन्यजीवों, पक्षियों, प्रकृति एवं पर्यावरण के असंतुलन एवं विनाश का बड़ा सबब बना है। मनुष्य के कार्य-व्यवहार से ऐसा मालूम होने लगा है, जैसे इस धरती पर जितना अधिकार उसका है, उतना किसी ओर का नहीं- न वृक्षों का, न पशुओं का, न पक्षियों का, न नदियों-पहाड़ों-तालाबों का। दरअसल हमारे यहां बड़े जीवों के संरक्षण पर तो ध्यान दिया जाता है, पर गौरैया जैसे छोटे पक्षियों के संरक्षण पर उतना नहीं। वृक्षारोपण, जैविक खेती को बढ़ाकर तथा माइक्रोवेव प्रदूषण पर अंकुश लगाकर गौरैया को विलुप्त होने से बचाया जा सकता है। अब भी यदि हम जैव विविधता को बचाने का सामूहिक प्रयास न करें, तो बहुत देर हो जाएगी।

**सन्दर्भ**

1. सलीम अली भारतीय पक्षियों की पुस्तक
2. विश्व गौरैया दिवस पर विशेष आलेख : राकेश बिहारी शर्मा
3. अभी मैं जिन्दा हूँ... गौरैया- संजय कुमार
4. WWW.House sparrow